ज्ञान - विज्ञान विमुक्तये

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

एवं

शिक्षण महर्षि ज्ञानदेव मोहेकर महाविद्यालय, कलम

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित,

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

२७ तथा २८ जनवरी २०१७

भाषा, समाज और समकालीन हिन्दी साहित्य

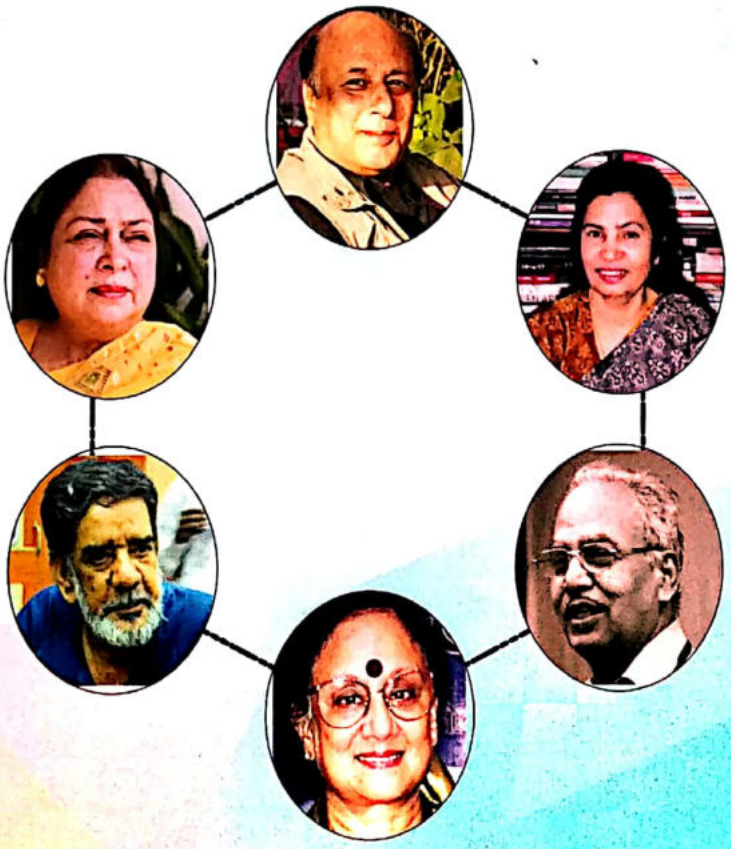

मार्गदर्शक

डॉ. अशोकराव मोहेकर

अध्यक्ष

डॉ. मुकुंद गायकवाड

संपादक

डॉ. दत्ता साकोळे

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

समकालीन हिंदी कहानी

अनु.	विषय	नाम	पृष्ठ सं.
1.	समकालीनता के परिप्रेक्ष्य में उदय प्रकाश की कहानियाँ	प्रा.डॉ. शिंदे प्रकाश	01
2.	समकालीन हिंदी कहानी भाषा और शिल्प	प्रा.डॉ. गणपत माने	05
3.	समकालीन कहानी साहित्य में स्त्री समस्या	संजीवनी जनार्धन राठोड	09
4.	समय के यथार्थ से टकराती समकालीन कहानियाँ	डॉ. पुष्पलता अग्रवाल	12
5.	समकालीन हिंदी कहानी	डॉ. विजयकुमार कुलकर्णी	17
6.	समकालीन हिंदी कहानियों में आदिवासी विमर्श	प्रा.डॉ. एम.ए. येल्लुरे	20
7.	समकालीन हिंदी कहानी	डॉ. सुनिता हजारे	24
8.	समकालीन कहानी और ग्रामीण जीवन परिवेश	प्रा.डॉ. राजकुमार जाधव	27
9.	समकालीन हिंदी कहानियों में नारी विमर्श	प्रा. राम दगडू खलंग्रे	30
10.	केदारनाथ अग्रवाल की कहानियों में समकालीन जीवन का यथार्थ	डॉ. संतोष नागरे	35
11.	चन्द्रकिरण सौनरेक्सा के आदमखोर कहानी की गुनिया	डॉ.प्रा. संतोष कुलकर्णी	39
12.	युगीन यथार्थ की साक्षी : समकालीन कहानी	डॉ. मीरा निचळे	45
13.	समकालीन हिंदी कहानियों में दलित स्त्री	कु. पवार शितल दत्तात्रय	48
14.	समकालीन हिन्दी कहानी साहित्य का स्वरुप	प्रा. आर.एम. खराडे	51
15.	स्वाधीनता - आंदोलन और हिन्दी कहानी में नारी	प्रा. संदिप साकोळे	55
16.	हिन्दी दलित कहानियों में शोषण की स्थिति	डॉ. कृष्णमोहन के.वी.	60
17.	समकालीन कहानी में नारी की आर्थिक समस्या	प्रो. पी. सुनीता, डॉ. विद्याधर	63
18.	समकालीन महिला लेखिकाओं की कहानियों में नारी चेतना	प्रा.डॉ. एस.आर. सांगोळे	65
19.	समकालीन कथा - परिदृश्य में स्त्री कहानिकारों की भूमिका	प्रा. माधव मुंडकर	70
20.	समकालीन हिन्दी कहानी और व्यक्तिवादी चेतना	प्रा. सुरेखा चव्हाण	76
21.	समकालीन हिन्दी कहानी में राजनीतिक चेतना	प्रा. पल्लवी शास्त्री	79
22.	समकालीन स्त्री विमर्श और कहानी	डॉ. संगीता लोमटे	83
23.	लघुकहानियाँ और सामाजिक सरोकार	प्रा.शेंडगे सुलभा	89
24.	समकालीन हिंदी कहानी	डॉ. प्रकाश खुळे	91
25.	समकालीन आंबेडकरवादी साहित्य : सलाम कहानीसंग्रह	डॉ. सतीश घोरपडे	95
26.	राजी सेठ का कथा साहित्य	टी. सुमती	101
27.	समकालीन कहानी में भाषिक संवेदना	बी. तीरुमला देवी	103
28.	नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में अल्पसंख्यक विमर्श	प्रा. शेख परवीन बेगम	105

Scanned with CamScanner

10. केदारनाथ अग्रवाल की कहानियों में समकालीन जीवन का यथार्थ

- संतोष नागरे
सहा.प्रा.- हिन्दी विभाग
र.भ.अट्टल महाविदयालय,
गेवराई जि.बीड
ई-मेल-nagresantosh१@gmail.com

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील साहित्यधारा के शीर्षस्थ रचनाकार हैं। केदार जी कहानी संग्रह 'उन्मादिनी' नरेंद्र पुण्डरीक जी के सम्पादकत्व में उनकी जन्मशक्ती के अवसर पर सन २०११ में अनामिका प्रकाशन, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। जो केदार जी के बचपन के साथी भगौता बढ़ई जी को समर्पित है। केदार जी ने प्रस्तुत कहानी संग्रह की कहानियों का सृजन सन १९३१ के आस-पास 'बालेन्दु' काल के अवसान और जनोन्मुख कविता के आर्विभाव के संक्रमण काल के बीच किया है। इस संदर्भ में शंभु गुप्त कहते हैं,- "ये कहानियाँ बहुत पहले १९३१ के आस-पास लिखी गयी है। बहुत पहले का मतलब जब वे अपनी 'बालेन्दु'-कालीन 'सुकवि' वादी छवि से मुक्त होने की आत्मसंघर्षपूर्ण प्रक्रिया में चल रहे थे। सम्भवतः बालेन्दु काल के अवसान और जनोन्मुख कविता के अर्विभाव जिसकी पहली बानगी 'युग की गंगा' में देखने को मिलती है- के बीच का संक्रमण- काल इन कहानियों के सृजन का समय है।"[1] प्रस्तुत कहानी संग्रह की नौ कहानियों में विषय-वैविध्य हैं तथा वे नौ रत्नों की तरह अनमोल है। प्रेम, प्रकृति, मूल्य, स्त्री अस्मिता आदि को इन कहानियों में अभिव्यक्ति मिली है। हर कहानी अपने समसामयिक यथार्थ को बयान करती है। केदारनाथ अग्रवाल इस सन्दर्भ में भूमिका में कहते हैं,- "मैंने इस संग्रह में उन्हीं कहानियों को स्थान दिया है जो मेरे जीवन का विकास कर चुकी है। ये झूठी नहीं है और न काल्पनिक, जीवन की सच्ची घटनाओं का इसमें समावेश है।"[2] केदारनाथ अग्रवाल जी की कहानियों में अपने समकालीन जीवन की गंध है। केदारनाथ अग्रवाल की कहानियों की विशेषताएँ इसप्रकार हैं-

प्रेम -

जीवन की यात्रा में प्रेम अनिवार्य है। केदारजी की अधिकांश कहानियाँ प्रेम भाव को व्यक्त करती है। जिसे केदार जी की काव्य - यात्रा की पुर्वपीठिका के रुप में देखा जा सकता है। शंभु गुप्त इस सन्दर्भ में कहते हैं,- "अपनी प्रेम और दाम्पत्य की 'हे मेरी तुम' और 'जमुन जल तुम' जैसी हिन्दी की अद्वितीय प्रेम कविताओं की पूर्वपीठिका के बतौर इन कहानियों की बखूबी लिया जा सकता है।"[3] 'बसंत' कहानी के माध्यम से कहानीकार ने प्रेम मार्ग में बाधा बनी आर्थिक विषमताओं की दीवारों को गिराकर प्रेम-विवाह का समर्थन किया है। प्रेम ही मनुष्य जीवन में बसंत बनकर आता है। 'तुही पत राखनहार' केदार जी की आदर्शवादी प्रेम कहानी है। जिसमें बिछड़े हुए प्रेमी नन्दन और रेणु को मिलाकर मानो भगवान ने उनकी पत रख ली। विरह की आग में तपकर ही उनका प्रेम निखर गया। 'प्रेमलोक' कहानी में नवविवाहित दाम्पत्य रजतकुमार और स्वर्णरेखा के बीच का अंतरंग वार्तालाप है। जो हमें प्रेम के वास्तविक स्वरुप से रुबरु कराता है।

"प्रेमियों में प्रत्येक के लिए जीवन उत्सर्ग करने की निष्ठा होनी चाहिये। पतंग दीप-ज्योति में जलकर शुध्द और

Scanned with CamScanner

सात्विक प्रेम-मिलन की ही आकांक्षा करता है। मधुप केवल मधुभिक्षा चाहता है। वह कभी चमेली के अन्तराल में प्रेमलीला करने का बहाना करता है तो कभी बेला और मालती कुंज के निकट भटकता है। वह एकव्रत नहीं है।"[4] पति-पत्नी की आपसी विश्वसनीयता, एकनिष्ठता, परस्पर त्याग, समर्पण से ही संसार के भवसागर को प्रेम की नौका में बैठकर पार किया जा सकता है। सच्चे प्रेम लोक से ही इहलोक एवं परलोक सुधर जाता है। शंभु गुप्त इस सन्दर्भ में कहते हैं- "केदार जी की ये कहानियाँ यह संकेतित करती है कि दाम्पत्य में जनतंत्र तभी आता है, जब व्यक्ति जीवन के अन्य मामलों और सम्बन्धों -सन्दर्भों में जनतांत्रिक हो।... परिवार चूँकि सबसे बड़ी प्रयोगशाला है।... दाम्पत्य एकमात्र वह कसौटी है, जो अपनी जनतांत्रिकता को खरा घोषित कर सकती है।... केदार जी के यहाँ दाम्पत्य स्त्री-पुरुष सम्बन्धों का सर्वोपरि सत्व है। और दाम्पत्य भी वह जो पति-पत्नी के बीच निखालस बराबरी का सम्बन्ध हो।"[5] पारिवारिक प्रेम के साथ ही कहानीकार का प्राणि-मात्र तथा प्रकृति के प्रति प्रेम भाव 'उन्मादिनी' कहानी के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है।

प्रकृति -

केदारनाथ अग्रवाल प्रकृति सौन्दर्य के अनुपम चितेरे हैं। कहानीकार का प्रकृति प्रेम 'बसंत' 'प्रेम सम्बन्ध' 'तुही पत राखनहार' तथा 'उन्मादिनी' कहानी के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है। 'बसंत' कहानी में बसंत और फूल के माध्यम से प्रेम भाव को व्यक्त किया गया है। बसंत प्रकृति में नवचैतन्य लेकर आता है। 'प्रेम सम्बन्ध' कहानी में कोयल अपनी मधुर वाणी से जीवन में प्रेम करने का संदेश देती है। 'तुही पत राखनहार' कहानी के नंदन की अलौकिक तान सुनकर प्रकृति झूम उठती है। केदार जी कहते हैं,- "मंद समीर के झोंके उसकी तान पर मुग्ध होकर उसके श्री चरणों की रज अपने मस्तक पर धारण करने के लिए आकुल हो रहे थे।"[6] 'उन्मादिनी' कहानी की अबोध लड़की अग्रज नीम के पेड़ को अपनी आपबीती सुनाती रहती है। नीम का पेड़ सहानुभूतिवश अपनी पीली पत्तियों को गिराकर उसके दुख में संवेदना प्रकट करता है। मनुष्य और प्रकृति के बीच के रागात्मक सम्बन्धों को कहानीकार ने अभिव्यक्त किया है।

मूल्य -

आज के इस उपभोक्तावादी दौर में पैसा ही मूल्य बन जाने से शाश्वत मानवीय मूल्यों का ऱ्हास तीव्र गति से हो रहा है। समाज-हित को ध्यान में रखते हुए कहानीकार ने प्रेम, चारित्र्य, दया, क्षमा, शांति, आतिथ्य, परोपकार, सेवा, स्त्री-पुरुष समानता, मानवता आदि शाश्वत मानवीय मूल्यों को बचाये रखने के लिए अपनी कहानियों के माध्यम से उनकी वकालत की। शंभु गुप्त इस सन्दर्भ में कहते हैं,- "केदारजी अपनी इन थोड़ी सी कहानियों के मार्फत एक मूल्यनिष्ठ वैकल्पिकता की खोज हमें उपलब्ध कराते हैं।"[7] केदार जी की 'गलत- फहमी' कहानी चारित्र्य ही जीवन है, का संदेश देती है। तथा माँ-बाप को अपने बच्चों को सुसंस्कारित करने की जिम्मेदारी का अहसास भी दिलाती है। माँ-बाप का अपने बच्चों के प्रति तथा बच्चों का अपने माँ-बाप के प्रति विश्वास होना चाहिए। विश्वास के अभाव में गलत-फहमी का शिकार होकर परिवार किसप्रकार टूटकर बिखर सकता है इसका यथार्थ अंकन केदार जी ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से किया है। धर्म आज सबसे बड़ा उद्योग बन जाने से उसका विकृत रुप दिनों-दिन सामने आता जा रहा है। आज धर्म सेवा नहीं मेवा चाहता

Scanned with CamScanner

है। ऐसी स्थितियों में केदार जी ने 'नर्तकी' कहानी के माध्यम से आंतरिक शुध्दि पर बल देते हुए मानव धर्म को सर्वश्रेष्ठ धर्म के रुप में स्थापित किया। 'प्रेम- सम्बन्ध' कहानी प्रेम ही जीवन है का संदेश देती है। तो 'आदर्श गृह-धर्म' कहानी के माध्यम से कहानीकार ने भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के शाश्वत मानव मूल्य-प्रेम, दया, क्षमा, शांति, स्त्री सम्मान, चारित्र्य, परोपकार, मानवता आदि की महत्ता का प्रतिपादन किया है। आदर्श गृह-धर्म में विश्वमंगल की कामना निहित होने से कहानीकार ने उसके विस्तार पर बल दिया है। इस सन्दर्भ में चन्द्रकुँअरि अफगान युवक से कहती है,- "सवार ! भविष्य में जीवन को सुधारो। मैं क्षमा करती हूँ। हमारे आदर्श गृह-धर्म का प्रचार अपने देश में अवश्य करना।"[8] आदर्श गृह-धर्म के पथ पर चलने से ही विश्वशांति को बनाये रखा जा सकता है, और इसी में विश्व का कल्याण है।

स्त्री अस्मिता -

केदारनाथ अग्रवाल स्त्री स्वतंत्रता के पक्षधर थे। कहानीकार ने सदियों से शोषण की चक्की में निरंतर पीसती नारियों की मूक वेदना को 'नर्तकी', 'आदर्श गृह-धर्म' तथा 'समाज की भूल' आदि कहानियों के माध्यम से वाणी देते हुए उनकी स्वतंत्रता पर बल दिया। शंभु गुप्त इस सन्दर्भ में ठीक ही कहते हैं,- "स्त्री की अस्मिता केदारनाथ अग्रवाल की इन कहानियों का महत्वपूर्ण कन्सर्न है।"[9] 'नर्तकी' कहानी के माध्यम से कहानीकार ने धर्म की आड़ में मठ-मन्दिरों के महन्तों द्वारा देवालय की नर्तकियों के साथ किये जानेवाले दुर्व्यवहारों को बेनकाब किया है। पुरुषप्रधान संस्कृति में नारी को सिर्फ उपभोग की वस्तु के रुप में ही देखा जाता है। नर्तकी महंत द्वारा उसके चारित्र्य पर लगाये गये झूठे आरोपों का सप्रमाण खंडन करती हुई कहती है,- "जिस व्यक्ति ने मुझपर दोषारोपण किया था उसका चरित्र तो अपने देख ही लिया। भले ऐसी कामी और नीचात्मा की वाणी का विश्वास करना उचित है।"[10] 'नर्तकी' धर्मसत्ता के विरुध्द लड़ती अकेली नारी की विजयगाथा है। चारित्र्य नारी का अलंकार होता है। अतः अपनी चारित्र्य की रक्षा के लिए चण्डिका-सा विकराल रुप धारण करती चन्द्रकुँअरि अफगान युवक से कहती है,- "युवक ! तुम विश्वासघाती हो। क्यों मेरे प्यासी तलवार के बलि के बकरे ! तेरा इतना दुस्साहस। यह नंगी चमचमाती हुई खड़ग ही तेरी वासना को पूर्ण कर सकती है।"[11] 'समाज की भूल' स्त्री स्वतंत्रता को लेकर लिखी गयी एक सशक्त कहानी है। पुरुष-प्रधान समाज व्यवस्था ने सदियों से स्त्री स्वतंत्रता का अपहरण कर उसे मानवीय अधिकारों से उपेक्षित रखा। समाज की इस भूल को सुधारने की वकालत केदार जी ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से की है। स्त्री ह्दय की विशालता की तुलना में पुरुषों की अत्यध्यिक स्वार्थंधता एवं कृतघ्नता की पोल खोलते हुए केदार जी कहते हैं,- "तेरे पति को पालकर समाज ने भूल की है। ऐसे धन लोलुप और कृतघ्नी पुरुष का जन्म व्यर्थ है, जो अपने जीवन को दूसरे की भलाई के लिये उत्सर्ग नहीं कर सकता। ऐसे नीच जीवों का न रहना ही संसार के लिए हित की बात है। जिस समाज में मनुष्यों ने स्त्रियों के अधिकार छीन लिये हैं उस समाज को ऐसे व्यक्तियों का बलिदान कर अपनी भूल का प्रायश्चित करना पड़ेगा।"[12]

भाषाशैली -

केदारनाथ अग्रवाल की कहानियों की भाषा विषयानुरुप सहज सम्प्रेषणीय है। केदार जी ने 'बसंत' पत्रात्मक तो

Scanned with CamScanner

'आदर्श गृह-धर्म' कहानी का कथा कथन शैली में सृजन किया है। केदार जी की कहानियों पर सुदर्शनीय शिल्प तथा प्रसादान्तता का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। शंभु गुप्त इस संदर्भ में कहते हैं,- "केदारनाथ अग्रवाल की ये कहानियाँ उस समय के सुदर्शनीय शिल्प में लिखी गई है। जिसपर प्रसादान्तता का भी पर्याप्त असर दिखाई देता है।"[13]

सारांश :-

प्रगतिशील साहित्यधारा के आधारस्तंभ केदारनाथ अग्रवाल जी के कहानी -संग्रह 'उन्मादिनी' की छोटी-छोटी कहानियाँ मानव मन-मस्तिष्क को परिष्कृत करने की अपूर्व क्षमताएँ रखती हैं। केदारजी ने अपनी कहानियों के माध्यम से समकालिन जीवन के प्रेम, प्रकृति, मानवीय मूल्य, स्त्री अस्मिता आदि विविध पहलूओं को सशक्त रुप में अभिव्यक्त किया है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. संपा. नरेंद्र पुण्डरीक, उन्मादिनी, पृ.क्र.80
2. वही , वही, भूमिका, (दो शब्द)
3. वही, वही, पृ.क्र.83
4. वही, वही, पृ.क्र.32
5. वही, वही, पृ.क्र.82
6. वही, वही, पृ.क्र.42
7. वही, वही, पृ.क्र.80
8. वही, वही, पृ.क्र.66
9. वही, वही, पृ.क्र.81
10. वही, वही, पृ.क्र.19
11. वही, वही, पृ.क्र.64
12. वही, वही, पृ.क्र.57
13. वही, वही, पृ.क्र.82

Scanned with CamScanner